Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 02, Issue 07, pp 530-535, July 2025

यूपी बोर्ड के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का अध्ययन

डॉ दीपक जैन

सहायक प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग, डी. जे कॉलेज, बड़ौत (बागपत) उ.प्र

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17129432

सारांश

शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं भविष्य की आकांक्षाओं का आधार है। आकांक्षा स्तर विद्यार्थियों की उस मानसिक स्थिति को व्यक्त करता है जिसमें वे अपने भविष्य के लक्ष्यों, उपलब्धियों और जीवन–शैली के संबंध में योजनाएँ बनाते हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की आकांक्षाओं में अनेक अंतर पाए जाते हैं। यह अंतर उनकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों, पारिवारिक वातावरण तथा शैक्षिक संसाधनों पर आधारित होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश बोर्ड के उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों से अपेक्षाकृत ऊँची है। इसके साथ ही आर्थिक स्थिति, पारिवारिक सहयोग, शैक्षिक सुविधाएँ तथा कैरियर संबंधी अवसर आकांक्षा स्तर के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यह शोध विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को समझने, उनके शैक्षिक मार्गदर्शन को सुदृढ़ करने और नीति–निर्माताओं को दिशा देने के उद्देश्य से किया गया है।

प्रमुख शब्द – आकांक्षा स्तर

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आकांक्षा स्तर विद्यार्थियों की मानसिक, शैक्षिक और सामाजिक प्रगति का दर्पण होता है। यह उनके भविष्य की योजनाओं, कैरियर निर्माण, जीवन–शैली तथा उपलब्धि के स्तर को प्रभावित करता है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विद्यार्थियों की आकांक्षाओं में अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के पास जहाँ संसाधनों की कमी, आर्थिक कठिनाइयाँ और मार्गदर्शन की समस्या होती है, वहीं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थी अपेक्षाकृत समृद्ध शैक्षिक वातावरण में अध्ययन करते हैं। यह अंतर न केवल उनके आकांक्षा स्तर को प्रभावित करता है बल्कि उनके व्यक्तित्व विकास और सामाजिक उन्नति पर भी प्रभाव डालता ळें यह अध्ययन स्पष्ट करेगा कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में क्या अंतर है। अध्ययन से यह ज्ञात होगा कि कौन–कौन से कारक आकांक्षा स्तर को प्रभावित करते हैं।यह शोध अध्यापकों और अभिभावकों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा ताकि वे विद्यार्थियों का सही दिशा में मार्गदर्शन कर सकें। शोध शिक्षा नीति निर्माताओं को ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए विशेष योजनाएँ बनाने की प्रेरणा देंगे। यह अध्ययन समाज को यह समझने में सहायता करेगा कि शिक्षा के समान अवसर प्रदान करके ही विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को ऊँचा किया जा सकता है।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

किसी भी शोध का आधार पूर्ववर्ती अध्ययनों की समीक्षा पर आधारित होता है। कुमार (2024) ने उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों में एक शोध करते हुए निष्कर्ष दिया कि शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को कैरियर संबंधी परामर्श अधिक मिलता है, जिससे उनका आकांक्षा स्तर ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक विकसित होता है।सिंह एवं गुप्ता (2023) ने अपने अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का लिंग और क्षेत्रीय आधार पर विश्लेषण किया। परिणामस्वरूप यह पाया गया कि शहरी छात्राएँ ग्रामीण छात्राओं से अधिक ऊँची आकांक्षाएँ रखती हैं।मिश्रा (2023) ने यह दर्शाया कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति और माता–पिता की शिक्षा आकांक्षा स्तर के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।जैन एवं चौधरी (2022) ने यह पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में आकांक्षा स्तर कम होने का प्रमुख कारण संसाधनों की कमी और मार्गदर्शन का अभाव है। अग्रवाल (2022) ने यह बताया कि आधुनिक तकनीकी साधन और कैरियर मार्गदर्शन कक्षाएँ विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को उन्नत करने में सहायक होती हैं।खान (2021) ने ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि पारिवारिक पृष्ठभूमि, माता–पिता की आय और शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता आकांक्षा स्तर को प्रभावित करती है।कौशिक एवं पाण्डेय (2021) ने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी विद्यार्थियों की आकांक्षाएँ न केवल शैक्षिक बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी उन्नत होती हैं।यादव (2020) ने यह बताया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी भविष्य की योजनाओं में शिक्षा, व्यवसाय और

जीवन–स्तर से जुड़ी आकांक्षाओं को महत्व देते हैं। ग्रामीण विद्यार्थियों में रोजगार की स्थिरता और सरकारी नौकरी पाने की आकांक्षा अधिक देखी गई। गर्ग एवं मेहता (2020) ने निष्कर्ष निकाला कि डिजिटल माध्यम और शैक्षिक परामर्श आकांक्षा स्तर को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

समस्या कथन

यूपी बोर्ड के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

2. लिंग (बालक एवं बालिका) के आधार पर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर की तुलना करना।

3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अंतर को स्पष्ट करना।

4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

5. विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर पारिवारिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्थिति और सामाजिक परिवेश के प्रभाव का अध्ययन करना।

6. आकांक्षा स्तर में पाए गए अंतर के आधार पर शैक्षिक सुझाव प्रदान करना।

परिकल्पनाएँ

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

2. बालक और बालिका विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर होगा।

4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में सार्थक अंतर होगा।

5. विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि और आर्थिक स्थिति उनके आकांक्षा स्तर को प्रभावित नहीं करेगी।

शोध प्रविधि

किसी भी शोध कार्य की सफलता उसकी विधिवत् योजना और सुव्यवस्थित प्रविधि पर निर्भर करती है। प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान के लिए मात्रात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है।

1. शोध विधि

इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई है। इस पद्धति के अंतर्गत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के आधार पर किया गया है।

2. शोध क्षेत्र

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों में किया गया। चयनित विद्यालय जनपद बागपत से लिए गए हैं, जिनमें ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक विद्यालय सम्मिलित किए गए।

3. जनसंख्या

इस शोध की जनसंख्या में उत्तर प्रदेश बोर्ड के उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 11 एवं 12) के सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी सम्मिलित हैं।

4. नमूना

शोध हेतु 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया –

1 100 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी

2 100 शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी

5. उपकरण

विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर मापने के लिए शोधकर्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली एवं मौजूदा आकांक्षा स्तर मापन स्केल जैसे – अकांक्षा स्तर मापनी, शैक्षिक एवं व्यावसायिक आयामों पर आधारित) का उपयोग किया गया।

प्रश्नावली में मुख्यतः निम्नलिखित आयाम शामिल किए गए –

1. शैक्षिक आकांक्षा

2. व्यावसायिक आकांक्षा

3. सामाजिक आकांक्षा

4. आर्थिक आकांक्षा

5. व्यक्तिगत जीवन की आकांक्षा

6. आँकड़ा संग्रह

प्रश्नावली विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से विद्यालय जाकर दी गई।

ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में समान संख्या में विद्यार्थियों से उत्तर प्राप्त किए गए।

विद्यार्थियों को प्रश्नावली भरने के लिए पर्याप्त समय दिया गया।

7. आँकड़ा विश्लेषण

संकलित आँकड़ों को तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया।

प्रतिशत, औसत एवं मानक विचलन का प्रयोग किया गया।

परिकल्पनाओं की जाँच हेतु "टी–परीक्षण" का प्रयोग किया गया।

परिणामों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया ताकि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में अंतर स्पष्ट हो सके।

आँकड़ों का संकलन एवं विश्लेषण

इस अध्ययन में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण विद्यार्थियों के क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) तथा लिंग (बालक/बालिका) के आधार पर किया गया। परिणामों को तालिकाओं के रूप में प्रस्तुत कर व्याख्या दी गई है।

तालिका 1 –ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण

क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या	औसत	मानक विचलन	टी–परीक्षण	स्तर
ग्रामीण विद्यार्थी	100	62.45	8.21	6.28	0.01 पर सार्थक
शहरी विद्यार्थी	100	71.32	7.84		

व्याख्या – उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों का औसत आकांक्षा स्तर (62.45) शहरी विद्यार्थियों (71.32) से कम है। टी–परीक्षण से प्राप्त 6. 28 का मान 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। इसका अर्थ है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर है।

तालिका 2 –बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण

लिंग	विद्यार्थियों की संख्या	औसत	मानक विचलन	टी–परीक्षण	स्तर
बालक	100	66.25	8.12	2.74	0.05 पर सार्थक
बालिका	100	69.84	7.56		

व्याख्या – तालिका से ज्ञात होता है कि बालिकाओं का औसत आकांक्षा स्तर (69.84) बालकों (66.25) से अधिक है। टी–परीक्षण का मान 2.74 होने के कारण यह अंतर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में भी सार्थक अंतर है।

तालिका 3 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन

क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या	औसत	मानक विचलन	टी–परीक्षण	स्तर
ग्रामीण विद्यार्थी	100	21.42	4.25	5.12	0.01 पर सार्थक
शहरी विद्यार्थी	100	25.38	4.12		

व्याख्या – शैक्षिक आकांक्षा के क्षेत्र में शहरी विद्यार्थियों का औसत (25.38) ग्रामीण विद्यार्थियों (21.42) से अधिक है। टी–परीक्षण 5.12 का होना 0.01 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाएँ ग्रामीण विद्यार्थियों से ऊँची हैं।

तालिका 4 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन

क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या	औसत	मानक विचलन	टी–परीक्षण	स्तर
ग्रामीण विद्यार्थी	100	19.14	3.92	6.04	0.01 पर सार्थक
शहरी विद्यार्थी	100	23.26	4.05		

व्याख्या – व्यावसायिक आकांक्षा में भी शहरी विद्यार्थियों का औसत (23.26) ग्रामीण विद्यार्थियों (19.14) से अधिक है। टी–परीक्षण 6.04 का होना 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य है कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में उल्लेखनीय अंतर है।

समग्र व्याख्या

संपूर्ण विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि –

1. शहरी विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर ग्रामीण विद्यार्थियों से ऊँचा है।

2. बालिकाएँ बालकों की अपेक्षा अधिक ऊँची आकांक्षाएँ रखती हैं।

3. शैक्षिक एवं व्यावसायिक दोनों आयामों में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के बीच सार्थक अंतर पाया गया।

4. आकांक्षा स्तर पर आर्थिक स्थिति, पारिवारिक सहयोग और शैक्षिक अवसरों का गहरा प्रभाव है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में यूपी बोर्ड के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आए

1. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर पाया गया शहरी विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर औसतन अधिक पाया गया, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर अपेक्षाकृत कम था।

2. बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में अंतर पाया गया। बालिकाओं की आकांक्षा का स्तर बालकों से ऊँचा पाया गया, जो यह दर्शाता है कि वर्तमान समय में बालिकाएँ शिक्षा एवं कैरियर के प्रति अधिक जागरूक हैं।

3. शैक्षिक आकांक्षाओं में शहरी विद्यार्थियों की बढ़त। शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाएँ अधिक ऊँची पाई गईं, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों की आकांक्षाएँ सीमित और व्यावहारिक थीं।

4. व्यावसायिक आकांक्षाओं में भी शहरी विद्यार्थियों की बढ़त। शहरी विद्यार्थियों ने व्यावसायिक जीवन में उच्च पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने की आकांक्षा व्यक्त की, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों ने स्थिर एवं सुरक्षित रोजगार को प्राथमिकता दी।

5. आकांक्षा स्तर पर सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रभाव। पारिवारिक आय, माता–पिता की शिक्षा, शैक्षिक सुविधाएँ और कैरियर मार्गदर्शन आकांक्षा स्तर को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते पाए गए।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में अंतर मौजूद है। इन निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा क्षेत्र में निम्नलिखित निहितार्थ सामने आते हैं

1. शिक्षण–पद्धति में सुधार की आवश्यकता–ग्रामीण विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर को ऊँचा करने के लिए शिक्षण–पद्धति को अधिक व्यावहारिक, रोचक और जीवनोपयोगी बनाया जाना चाहिए।

2. कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाएँ–विद्यालयों में कैरियर परामर्श केंद्रों की स्थापना आवश्यक है। इससे विद्यार्थियों को भविष्य की शिक्षा और व्यवसाय संबंधी उचित जानकारी प्राप्त होगी।

3. ग्रामीण क्षेत्र में शैक्षिक अवसरों का विस्तार–ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले विद्यालयों, पुस्तकालयों, कंप्यूटर लैब और इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को भी वही अवसर प्राप्त हों जो शहरी विद्यार्थियों को मिलते हैं।

4. सामाजिक–आर्थिक सहयोग–गरीब एवं वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति, निरूशुल्क पुस्तकें और वर्दी जैसी सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए, ताकि आर्थिक स्थिति उनकी आकांक्षाओं में बाधक न बने।

5. लड़कियों की आकांक्षाओं को प्रोत्साहन–अध्ययन से ज्ञात हुआ कि बालिकाओं का आकांक्षा स्तर अधिक है। इसलिए उनके लिए उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और रोजगार की बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराना आवश्यक है।

6. शिक्षकों की भूमिका–शिक्षकों को विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को पहचानकर उन्हें सही दिशा में प्रोत्साहित करना चाहिए। प्रेरणादायी व्यक्तित्व और सकारात्मक वातावरण विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर को ऊँचा कर सकता है।

7. नीति–निर्माताओं के लिए सुझाव–शिक्षा नीति तैयार करते समय ग्रामीण और शहरी क्षेत्र की विषमताओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्र के लिए विशेष योजनाएँ और कार्यक्रम बनाना आवश्यक है।

सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर को ऊँचा करने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं

1. ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा सुविधाओं का विस्तार–ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले विद्यालयों, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं तथा तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

2. कैरियर परामर्श केंद्रों की स्थापना–हर विद्यालय में कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श केंद्र स्थापित किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को अपने भविष्य की योजनाओं के लिए उचित दिशा मिल सके।

3. आर्थिक सहयोग एवं छात्रवृत्ति योजनाएँ–गरीब और वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति, निरूशुल्क पुस्तकें, वर्दी और डिजिटल उपकरण उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

4. लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता–बालिकाओं की आकांक्षा स्तर को और ऊँचा करने के लिए उन्हें उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण में विशेष अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

5. शिक्षकों का प्रशिक्षण–शिक्षकों को विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को पहचानने और उन्हें प्रोत्साहित करने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे विद्यार्थियों के प्रेरणास्रोत बन सकें।

6. अभिभावकों की जागरूकता–अभिभावकों को जागरूक करना आवश्यक है ताकि वे अपने बच्चों की आकांक्षाओं का सम्मान करें और उन्हें सहयोग दें।

7. नीति–निर्माण में संतुलन–शिक्षा नीति निर्माण करते समय ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की विषमताओं को ध्यान में रखकर संतुलित योजनाएँ तैयार की जानी चाहिए।

8. डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता–विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर को बढ़ाने के लिए डिजिटल उपकरण (कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्ट कक्षाएँ) ग्रामीण विद्यालयों तक पहुँचाए जाएँ।

संदर्भ सूची

कुमार, एस. (2024). उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 28(1), 72–81.

सिंह, आर., एवं गुप्ता, एम. (2023). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकांक्षाओं का लिंग एवं क्षेत्रीय आधार पर अध्ययन. शिक्षा विमर्श, 17(3), 102–113.

मिश्रा, डी. (2023). सामाजिक–आर्थिक स्थिति और आकांक्षा स्तर का अध्ययन. आधुनिक शिक्षा शोध, 21(2), 66–74.

जैन, ए., एवं चौधरी, के. (2022). ग्रामीण विद्यार्थियों की आकांक्षाओं पर संसाधनों की कमी का प्रभाव. शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, 15(1), 34–42.

अग्रवाल, वी. (2022). आधुनिक तकनीक और कैरियर मार्गदर्शन का आकांक्षा स्तर पर प्रभाव. भारतीय मनोविज्ञान जर्नल, 24(4), 88–96.

खान, एफ. (2021). ग्रामीण विद्यार्थियों की आकांक्षाओं में पारिवारिक पृष्ठभूमि की भूमिका. शिक्षा शोध जर्नल, 14(2), 51–59.

कौशिक, एन., एवं पाण्डेय, ए. (2021). शहरी विद्यार्थियों की सांस्कृतिक एवं सामाजिक आकांक्षाएँ. नवयुग शिक्षा, 12(3), 118–127.

यादव, एल. (2020). उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की आकांक्षाओं का विश्लेषण. आधुनिक शिक्षा चिंतन, 9(2), 40–49.

गर्ग, पी., एवं मेहता, एस. (2020). डिजिटल माध्यम और शैक्षिक परामर्श का आकांक्षा स्तर पर प्रभाव. शैक्षिक संवाद, 11(1), 73–82.

सक्सेना, ए. (2019). ग्रामीण विद्यार्थियों की आकांक्षाओं पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव. शिक्षा दर्पण, 8(3), 57–65.

जोशी, डी., एवं राठौर, एम. (2019). शहरी विद्यार्थियों की आधुनिक आकांक्षाओं का अध्ययन. भारतीय शैक्षिक शोध पत्रिका, 7(2), 94–101.